सोमू का जन्मदिन
अमृतलाल नागर

सोमू का जन्मदिन

—अमृतलाल नागर

वाणी प्रकाशन
21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
फोन : 23273167, 23275710, 51562621, 51562622
फैक्स : 23275710
e-mail : vani_prakashan@yahoo.com
vani_prakashan@mantraonline.com

मूल्य : ₹ 30 ISBN : 81-7055-163-3 संस्करण : 2012

एक पंडितजी थे, बहुत सीधे और भले। किसी की मुसीबत देखकर वह तुरन्त उसकी सहायता करते थे। पर वे बेचारे अमीर तो थे नहीं, कुछ घरों में जाकर पूजा-पाठ करते, कथा सुनाते इसी से उनकी कमाई चलती थी। पंडितजी की पत्नी और दो मुन्नी-मुन्नी बच्चियां थीं। उनके घर में सब लोग बड़े अच्छे और दयावान थे।

पंडितजी के घर के पास एक पेड़ था। एक दिन क्या हुआ कि न जाने कहां से लगभग सत्तर-अस्सी या शायद इससे भी ज्यादा बंदर-बंदरियां लड़ते हुए पेड़ पर आ पहुंचे। वे लोग आपस में चींचीं, खों-खों करते हुए खूब लड़ रहे थे। एक दूसरे को काटते-मारते ढकेलते इस डाल से उस डाल पर कूद कर उत्पात मचा रहे थे। उनमें एक बंदरिया थी। वह अपने मुन्ने

से बच्चे को पेट से चिपकाये लड़ाई-झगड़े से दूर पत्तों में छिपी बैठी थी। वह बच्चा उसी दिन पैदा हुआ था इसलिए बंदरिया बहुत कमजोर और बीमार भी थी। दुर्भाग्य की मार कि दोनों दलों के बंदर सरदार एक दूसरे से आपस में गुंथ गए। दोनों बड़े मोटे-मोटे थे। उनमें जो गुत्थम-गुत्था हुई तो एक सरदार के धक्के से दूसरा सरदार नीचे लुढ़का। वह संयोग से उसी बंदरिया पर गिरा जो अपने बच्चे को पेट से चिपकाये बैठी थी। बेचारी अचानक इस धक्के को संभाल न पायी और अपने बच्चे के साथ ही साथ पेड़ से नीचे आ गिरी। एक नोकीले पत्थर पर गिरने के कारण बेचारी बंदरिया का सिर फट गया। वह मर गई। गली में बहुत से लड़के और आदमी इस लड़ाई को देखने के लिए जमा हो गए थे। उन्होंने पेड़ पर पत्थर बरसाने शुरू किए और 'लगे-लगे! भाग-भाग' का शोर मचाने लगे। राम-राम करके बंदर तो भाग गए पर वह बेचारी मरी हुई बंदरिया पड़ी ही रह गई। उसका चुन्ना-मुन्ना बच्चा उसके पेट से चिपका हुआ चीख रहा था। भगवान की कृपा से उसको ज़रा भी चोट नहीं आई।

सब लोग कहने लगे इस बच्चे का क्या होगा? पंडितजी की दोनों बेटियां चुनिया और मुनिया वहां खड़ी हुई थीं। उनकी मां भी अपने घर की खिड़की से देख रही थी। चुनिया ने गिड़गिड़ाकर मां से कहा कि मां-मां इस बेचारे को ले आऊं। मां ने भी बड़ी दया दिखलाई और कहा कि हां जल्दी से ले आ।

बच्चे की रक्षा के लिए खून से सनी मरी हुई बंदरिया से भी चुनिया को न तो घिन आई न वैसा डर लगा जैसा बच्चों को लगता है। उसने बच्चे को मां के पेट से खींच लिया। बच्चा अपनी महीन सी आवाज में बहुत चीखा। खिलौने जैसे मुन्ने-मुन्ने हाथ-पैर भी खूब चलाए मगर चुनिया उसको अपनी गोदी में चिपका कर घर ले ही आई। बन्दर का बच्चा चीखता रहा परन्तु जैसे ही चुनिया-मुनिया की मां ने उसे लेकर अपनी छाती से चिपका लिया वैसे ही वह चुप हो गया।

पंडितजी के घर में बन्दर का बच्चा बड़े ही लाड़-प्यार में पलने लगा। वह सोमवार के दिन जन्म लेकर इस घर में आया था। इसलिए पंडितजी ने उसका नाम सोमनाथ रख दिया। घर में सब लोग

उसे सोमू-सोमू पुकारते थे। सोमू बड़ा नट-खट था। सबका मन रिझाता था। पंडितजी चुनिया-मुनिया से कहते कि तुम्हारे कोई भाई नहीं था इसलिए भगवान ने तुम्हें यह बंदर भैया दिया है।

चुनिया-मुनिया जब स्कूल जातीं तो सोमू भी उछलता-कूदता हुआ उनके पीछे-पीछे जाता। कभी उनकी किसी सहेली के कंधे पर उचक कर चढ़ जाता तो वे चीख पड़तीं और दूसरी सहेलियां तथा चुनिया-मुनिया भी हंस पड़ती थीं, लेकिन सोमू से किसी को डर नहीं लगता था। वह स्कूल के फाटक तक अपनी बहनों को पहुंचाकर सीधे घर ही पहुंचता था। एक दिन क्या हुआ कि बड़ी बहन चुनिया तो जल्दी-जल्दी अपनी सहेलियों के साथ स्कूल के लिए निकल गई पर मुनिया अभी अपना बस्ता ही सजा रही थी। इसलिए उसे घर से चलने में ही देर हुई। वैसे तो सोमू भी चुनिया बहिन के साथ ही घर से बाहर निकल गया था। लेकिन थोड़ी दूर चलकर उसने देखा कि अभी मुनिया नहीं आई है तो फिर पीछे लौटा। उसने देखा कि जैसे ही मुनिया अपने घर से बाहर निकली वैसे ही एक लाल-लाल आंखों वाले

डरावने बाबाजी ने झट से उसकी नाक पर एक रूमाल रख दिया उस रूमाल में बेहोशी की दवा लगी हुई थी। बेचारी मुनिया बेहोश होकर गिरने लगी तो बाबाजी ने उसको उठाकर झोली में रख लिया। उस समय गली में एकदम सन्नाटा था। सोमू ने जब यह देखा तो चीख-चीखकर उस डरावने बाबा के पीछे दौड़ा। पास आने पर बाबा उसे लाठी मार देता था। बाबा शहर की तरफ से गया ही नहीं बल्कि पीछे नाले को पार करके जंगल की तरफ चला गया। सोमू भी जब उस कच्चे पुल की तरफ बढ़ने लगा तो उसने एक बड़ा सा पत्थर उठाकर उस पर खींच मारा। सोमू बेचारे की एक टांग घायल हो गई। वह गिर पड़ा। और बाबाजी मुनिया को झोली में छिपाके तेजी से दौड़ गया। सोमू बेचारा बड़ी देर तक तो चल ही नहीं पाया फिर किसी तरह लंगड़ाते-लंगड़ाते घर पहुंचा। घर में पंडितजी आ गए थे। वह चींची करके पंडितजी की धोती का पल्ला पकड़कर धीरे-धीरे खींचे लेकिन न बेचारे पंडितजी ही समझ पाए कि वह क्या कह रहा है और न उसकी पत्नी। सोमू बेचारा बावला सा इधर-उधर मंडराये और कराहे। पंडितजी की पत्नी

ने यह समझा कि इसके पैर में चोट है। इसलिए हल्दी-चूना लेप करके पट्टी बांध दी।

शाम को चुनिया तो स्कूल से लौट आई पर मुनिया बेचारी का कहीं भी पता न चला। सब जने उसे ढूंढ़ने लगे। पर कहीं पता न चले। और बेचारा सोमू अपनी सूजी हुई टांग के कारण चल भी नहीं पा रहा था। इसलिए कोने में पड़ा-पड़ा कराहे। लेकिन वह अपनी बात किसी को समझा नहीं सकता था। अब क्या हो?

बेचारी चुनिया और उसकी मां बहुत रोईं। पंडितजी भी बड़े दुःखी थे। पास-पड़ोसवाले भी परेशान थे। पंडितजी ने पुलिस में भी रिपोर्ट लिखाई थी पर पुलिस भी उसकी तलाश न कर सकी। तीसरे दिन सोमू की टांग की सूजन भी कम हुई और दर्द भी कम हुआ।

तीसरे दिन चुपचाप वह घर से निकल कर पीछे की गलियों में होता हुआ नाले के पुल को पार कर वह जंगल में जा पहुंचा। बेचारा इधर से उधर सारे जंगल में भटकता रहा पर उसे कहीं मुनिया न मिली।

एकाएक उसे चीख सुनाई दी। सोमू के कान खड़े

हुए। कूदता-फांदता वह उसी तरफ बढ़ चला। आगे चलकर देखता क्या है कि खण्डहर में वही डरावना साधू बाबा तीन बच्चों को सड़ा-सड़ मार रहा है। उन बच्चों में सोमू की छोटी जीजी मुनिया भी थी। अब तो सोमू की परेशानी बहुत बढ़ गई वह अपनी बन्दर बुद्धि से यह सोचने लगा कि इस डरावने बाबा से आखिर कैसे बदला लिया जाए। वह खण्डहर की एक दीवाल के ऊपर छिपा हुआ बैठा था। उसने दीवाल की ईंट उखाड़-उखाड़ कर फेंक कर बाबा को मारना शुरू किया। जब ऊपर से ईंटें बरसने लगीं तो बाबा उधर दौड़ा मगर सोमू ईंटें खोद-खोद कर बाबा के ऊपर फेंके और छिप जाए। बाबा की खोपड़ी में चोट लगी, गाल से खून निकलने लगा। नाक टूटी, और एक ईंट पड़ी तो एक आंख भी फूट गई। आंख में चोट लगी तो बाबा लड़खड़ाकर गिर गया।

बेचारे तीनों बच्चे घबराए हुए यह तमाशा देख रहे थे कि कौन उनको भगाकर ले आने वाले बाबा को मार रहा है। तभी मुनिया ने सोमू को देख लिया और सोमू-सोमू चिल्ला उठी। लेकिन सोमूजी तो उस समय बाबाजी से बदला लेने पर तुले हुए थे। गिरे

हुए बाबा पर ईंटें उखाड़-उखाड़ कर दनादन फेंकता ही चला जा रहा था। जब बाबा बेहोश हो गया तो वह मुनिया के पास आया। मुनिया ने उसे लपककर गोदी में उठा लिया और तीनों बच्चे वहां से भाग निकले।

रास्ता बतलाते हुए आगे-आगे सोमू उन्हें नाले के पार ले आया। थोड़ी दूर चलकर जब मुहल्ले के लोगों ने मुनिया और बच्चों को देखा तो बड़े खुश हुए। जब बच्चों ने बाबा का हाल और सोमू की बहादुरी का बखान किया तो मुहल्ले के कुछ लोग मुनिया और खोए हुए बच्चों को लेकर उनको पहुंचाने गए और कुछ लोग सोमू को रास्ता बतलाने के लिए साथ लेकर जंगल में निकल गए। बाबा लंगड़ाते-लंगड़ाते अपना सामान उठाकर कहीं जाने ही वाला था कि लोगों ने उसे मार-मार कर ले जाकर पुलिस हवालात में बंद करवा दिया।

उधर पंडितजी के घर बड़ी खुशियां मनाई जा रही थीं। और सोमू की प्रशंसा की जा रही थी तभी पंडितजी ने बतलाया कि आज सोमू का जन्म-दिन है। इस पर चुनिया-मुनिया और उसकी सहेलियों ने

खुश होकर सोमू को घेर कर "हैप्पी बर्थडे टू यू" गाना शुरू किया। सब तरफ सोमू की तारीफ होने लगी। बड़े-बूढ़े लोग कहने लगे जो भला करता है भगवान उसका भी भला करता है।

मुद्रक : *यश प्रिंटोग्राफ शाहदरा दिल्ली-32*